दिनांक 04.07.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

सम्पूर्णता के निशाने पर शिवबाबा हमें पहुंचाते
निशाने के पास पहुँचने की पहचान हमें बताते

कर्मातीत बनकर हर कर्म बंधन से मुक्ति पाओ
सिर्फ निमित्त भाव से अपने तन से कर्म कराओ

सतयुगी तन रूपी चोला तुम्हें स्पष्ट दिखाई देगा
चोला धारण करने का संकल्प सदा जगा रहेगा

अपनी स्थिति ज्ञान स्वरूप श्रेष्ठ सम्पन्न बनाओ
निरन्तर एकरस स्थिति से हलचल को मिटाओ

नयन ज्ञान के खोलकर सदा योगी बनते जाओ
स्वच्छ निश्चय बुद्धि के द्वारा हर संशय मिटाओ

कमजोर संकल्प की चिंता में शक्ति ना गंवाओ
संशय बुद्धि बनकर तुम माया को नहीं बुलाओ

रहम पड़ता बाबा को मैं सबको सम्पूर्ण बनाऊं
किन्तु ईश्वरीय मर्यादाओं को तोड़ नहीं मैं पाऊं

फिर भी अपने बच्चों की मदद अवश्य करूँगा
बच्चे एक कदम चलेंगे तो मैं सौ कदम चलूँगा

मन को दृढ़ निश्चय द्वारा समर्थी स्वरूप बनाओ
हर बार की तरह इस बार भी माया को हराओ

बाप के सामने कभी अपना चरित्र नहीं छुपाओ
बाप को बहुचरित्र दिखाकर बोझ नहीं चढ़ाओ

एक मर्यादा का उल्लंघन लाखों बोझ चढ़ाएगा
उड़ती कला में कभी भी कदम नहीं बढ़ पाएगा

अपना मरजीवा जीवन ईश्वरीय सेवा में लगाओ
मर्यादाएं अपनाकर मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाओ